प्रयोजनमूलक हिन्दी

भाषा का मुख्य कार्य है – संप्रेषण। संप्रेषण का तात्पर्य है कि वक्ता का कथन श्रोता तक उसी अर्थ में पहुँचे, जिस अर्थ में वक्ता ने प्रयोग किया है। सामान्य व्यवहार की भाषा को व्यक्ति स्वयं अपने घर–परिवार, समाज से सीख लेते हैं। इसके लिए किसी औपचारिक तालीम की जरूरत नहीं होती। साहित्य भाषा के संप्रेषण की क्रिया अपेक्षाकृत जटिल होती है। व्यक्ति को स्व–अध्ययन या औपचारिक शिक्षण और अभ्यास से इसे प्राप्त करना होता है। जब कोई भाषा किसी देश के शासन के लिए राजभाषा बनती हैं तब उसका प्रयोग विभिन्न कार्यक्षेत्रों में विशिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है। आज भारतीय संघ की 'राजभाषा' हिन्दी है और उसकी लिपि देवनागरी। विशिष्ट कार्यक्षेत्रों की प्रयोजनपरक हिन्दी की आज 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' कहा जाता है।

व्यवहार की भाषा, साहित्यक भाषा भी व्यक्ति और रचनाकार की विभिन्न औपचारिक–अनौपचारिक आवश्यकताओं से नियंत्रित होती है। इसी कारण हमें कविता, कहानी नाटक, उपन्यास आदि की भाषा में इशत् अंतर दिखाई देता हैं। अनेकार्थता श्रेष्ठ साहित्यिक भाषा का हक, आवश्यक गुण है साथ ही साहित्यिक भाषा लक्षणा तथा साथ ही प्रत्येक कार्यक्षेत्र की विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली निश्चित हैं व्यंजना प्रधान होती है । इसके विपरत प्रयोजनमूलक भाषा एकार्थी, अलंकार विहीन तथा अभिधाप्रधान होती हैं । प्रयोजनमूलक हिन्दी का आधार भी मानक हिन्दी की शब्दावली, रूपरचना तथा व्याकरणिक संरचना ही है। प्रत्येक प्रयोजन क्षेत्र की शब्दावली में थोड़ी भिन्नता है । इस कारण प्रयोजन मूलक हिन्दी को सायास सीखना पड़ता है। यह औपचारिक क्षेत्र शैली में होती है।

'प्रयोजन मूलक' शब्द प्रयोजन (विशेषण) में मूलक (प्रत्यय) जुड़कर बना है। 'प्रयोजन' का अर्थ है – 'उद्देश्य' तथा 'मूलक' का अर्थ है – आधारित, निर्भर या आश्रित। इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य हुआ – किसी निश्चित उद्देश्य पर आधारित हिन्दी, यानी निश्चित उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रयुक्त की गई हिन्दी।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के तीन आयाम माने गए हैं–

(1) विषयवस्तु का आयाम (2) मौखिक – लिखित आयाम और (3) शैली का आयाम

(1) विषयवस्तु का आयाम : यह ध्यान रखा जाता है कि जिस विषय के लिए प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग करना है वह, तकनीकी है या अर्धतकनीकी अथवा गैर तकनीकी। क्योंकि प्रत्येक विषय की पारिभाषिक तथा सामान्य शब्दावली में अंतर होता है। प्रशासन, वाणिज्य, पत्रकारिता, खेलकूद और कार्यालय के क्षेत्र अर्धतकनीकी हैं जब कि विज्ञान, प्राद्योगिकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा (मेडिकल), न्याय, विधि–आदि तकनीकी क्षेत्र में आते हैं।

(2) मौखिक – लिखित आयाम : कार्यालयी, वैज्ञानिक, प्राद्योगिकी आदि क्षेत्रों की भाषा प्राय: लिखित ही होती है जब कि आकाशाणी, दूरदर्शन में यह लिखित भाषा का मौखिक रूप होता है। विधि भाषा मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों मे प्रयुक्त होती है।

(3) शैली का आयाम : विज्ञान, विधि, इंजीनियरी जैसे तकनीकी विषयों की भाषा रूढ़िगत और शैली औपचारिक होती है। अर्ध तकनीकी विषयों; जैसे–पत्रकारिता, कार्यालयी, विज्ञापन आदि की भाषा में सभी प्रकार के शैली रूप (सामान, औपचारिक, अनौपचारिक तथा अंतरंग) मिलते हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के विज्ञापनों की भाषा औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों शैलियों में मिलती है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ :

संविधान में राजभाषा स्वीकृत होने के बाद हिन्दी के व्यवहारपरक पक्ष की ओर विद्वानों का ध्यान गया। काम काज तथा प्रयोग के स्तर पर हिन्दी के व्यवहार की कल्पना ने 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' का रूप अख्तियार किया। 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' मानक हिन्दी का ठोस विस्तार और नए रूप में परिवर्द्धन है। प्रयोजनपरकता इसकी मुख्य विशेषता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी में प्रत्येक विषय के लिए अनुकूल पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की भाषा सटीक, सुस्पष्ट, गंभीर, सरल, अभिधाप्रधान और एकार्थक होती है और इसमें कहावतों, मुहावरों, उक्तियों, अलंकारों तथा प्रतीकों के लिए कोई स्थान नहीं है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ

आप जान चुके हैं कि भाषा का प्रयोगगत रूप ही प्रयोजनमुलक रूप है जो विशिष्ट संदर्भ, शैली और क्षेत्र की भाषा के आधार पर बनता है। भाषा के ये विभिन्न रूप भाषा की 'प्रयुक्ति' कहलाते हैं। इस दृष्टि से कार्यालय, बैंकिंग इंजीनियरी जैसे कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्ति भाषा रूपों को क्रमश: कार्यालयी-प्रयुक्ति, बैंकिग-प्रमुक्ति तथा इंजीनियरी-प्रयुक्ति कहते हैं। प्रत्येक प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। एक कार्यक्षेत्र में प्रयुक्ति शब्द का एक ही सुनिश्चित अर्थ होता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियों का सुनिश्चित अर्थ होता हैं। सुविधा के लिए प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियों को निम्नलिखित चार प्रकारों में बाँटा जा सकता है-

(1) कार्यालयी हिन्दी

(2) तकनीकी हिन्दी

(3) वाणिज्यिक हिन्दी और

(4) जनसंचारी हिन्दी

(1) कार्यालयी हिन्दी : सरकारी प्रशासन, काम, काज में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी का एक रूप कार्यालयी हिन्दी है। कार्यालय की प्रयुक्ति में एक ही शब्द, अपूर्ण वाक्य भी पूरे वाक्य का अर्थ देता है; जैसे- तत्काल, गोपनीय, अवलोकनार्थ, आवश्यक कार्रवाई के लिए आदि।

(2) तकनीकी हिन्दी : विधि, विज्ञान, प्रद्योगिकी, इंजीनियरी, मेडिकल शिक्षा में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी को तकनीकी हिन्दी के अंतर्गत माना गया है। संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग वैज्ञानिक प्रयुक्ति की विशेषता हैं। संकेत प्राय: रोमन या ग्रीकअक्षरों या चिह्नों के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे - अल्फा (α) बीटा (β) और गामा (ν) का प्रयोग, घनत्व, परमाणु तथा सी.एन.जी. आदि शब्दों का वैज्ञानिक प्रयुक्ति में विशेष अर्थ है।

(3) वाणिज्यिक हिन्दी : बैंक, मंडियों तथा व्यापार-व्यवसाय में प्रयुक्त हिन्दी वाणिज्यिक हिन्दी कहलाती है। मुद्रा, उत्पादन, पूँजी, दिवाला, दलाल या बिचौलिया आदि शब्दों का इन क्षेत्रों में अपना विशेष अर्थ है। बाजार की भाषा में 'दाल में आग लगी है', 'चाँदी लुढ़की', 'तेल नरम' आदि अभिव्यक्तियाँ वाणिज्यिक हिन्दी की अभिव्यक्तियाँ हैं।

(4) जनसंचारी हिन्दी : पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा विज्ञापन आदि में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी जनसंचारी हिन्दी कहलाती है। तत्काल संप्रेषण इसकी प्रमुख विशेषता है। विज्ञापन की भाषा ध्यानाकर्षक होनी चाहिए। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त कुछ शब्द इस प्रकार हैं: मुक्केबाजी, एक दिवसीय मैच, टी-20, चौका, पारी, फिरकी गेंदबाज आदि।

आज अनेक नए क्षेत्रों में हिन्दी के द्वार खुले हैं, खुल रहे हैं। इन सभी क्षेत्रों के उपयुक्त प्रयोजनमूलक हिन्दी के गढ़ने का कार्य चल रहा है, अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास की संभावनाएँ अपार हैं।

स्वाध्याय

1. संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

(1) सम्प्रेषण की परिभाषा लिखिए।

(2) प्रयोजनमूलक हिन्दी किसे कहते हैं ?

(3) वाणिज्यिक हिन्दी अर्थात् क्या ?

(4) विज्ञापन लेखन प्रयोजनमूलक हिन्दी की किस प्रयुक्ति में किया जाता हैं ?

2. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(1) तकनीकी हिन्दी (2) प्रयोजनमूलक हिन्दी के आयाम

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ लिखिए।

(2) साहित्यिक भाषा तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी में क्या अंतर है ?

●